पूर्ण भगवत्कृपा को प्राप्त करता है और इस प्रकार सब प्रकार के राग-द्वेष से मुक्त हो जाता है।।६४।।

तात्पर्य

पूर्व श्लोकों में कहा जा चुका है कि इन्द्रियों को भगवत्सेवा में नियुक्त किये बिना किसी कृत्रिम पद्धति के द्वारा बाह्य रूप से इन्द्रियों का नियन्त्रण कर लेने पर भी पतन की पूर्ण सम्भावना रहती है। दूसरी ओर, पूर्णतया कृष्णभावनाभावित पुरुष बाह्य रूप से चाहे विषयों में ही संलग्न क्यों न दिखे, परन्तु कृष्णभावनाभावित होने से इन क्रियाओं में आसक्त नहीं होता। श्रीकृष्ण का सन्तोष करना कृष्णभावनाभावित पुरुष का अनन्य प्रयोजन है। अतएव वह सब प्रकार की आसक्ति से मुक्त रहता है। श्रीकृष्ण की इच्छा होने पर भक्त ऐसा कर्म करने में भी संकोच नहीं करता, जिसे सामान्यतः अवाञ्छनीय समझा जाता हो और यदि श्रीकृष्ण की इच्छा न हो तो वह उस कर्म को भी नहीं करेगा, जिसे अपने लिए सामान्य रूप से करता हो। इसलिए किसी कर्म को करना या न करना पूर्ण रूप से उसके हाथ में है, क्योंकि वह श्रीकृष्ण की आज्ञानुसार ही कर्म करता है। यह बुद्धियोग श्रीश्यामसुन्दर की अहैतुकी निरवधि अनुकम्पा का मूर्तरूप है, जिसकी प्राप्ति भक्त को इन्द्रियों में आसक्त होते हुए भी हो सकती है।

24.2

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते।।६५।।

प्रसादे=अहैतुकी भगवत्कृपा की प्राप्ति से; **सर्वदुःखानाम्**=समस्त दुःखों का; **हानिः**=नाश; **अस्य**=उसके; **उपजायते**=हो जाता है; **प्रसन्नचेतसः**=आह्लादित चित्त वाले की; **हि**=निःसन्देह; **आशु**=अति शीघ्र; **बुद्धिः**=बुद्धि; **परि**=पर्याप्त रूप में; **अवतिष्ठते**=स्थिर हो जाती है।

अनुवाद

भगवत्कृपा के द्वारा बुद्धियोग से युक्त पुरुष के तीनों प्रकार के दुःख नष्ट हो जाते हैं। ऐसे प्रसन्नचित्त वाले की बुद्धि भी अतिशीघ्र स्थिर हो जाती है।।६५।।

25.2

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्।।६६।।

न अस्ति=नहीं होती; **बुद्धिः**=दिव्य बुद्धि; **अयुक्तस्य**=जो कृष्णभावना से युक्त नहीं है, उसमें; **न**=नहीं; **च**=तथा; **अयुक्तस्य**=कृष्णभावना से शून्य पुरुष में; **भावना**=प्रसन्नचित्त; **न**=नहीं; **च**=तथा; **अभावयतः**=अस्थिर बुद्धिवाले में; **शान्तिः**=शान्ति; **अशान्तस्य**=अशान्त का; **कुतः**=कैसे (होगा); **सुखम्**=सुख।

अनुवाद

जो कृष्णभावना (बुद्धियोग) से युक्त नहीं है, उसका चित्त वश में नहीं होता